राज्य अध्याय 8

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर की उपस्थिति के विषय में जागरूकता के लिए, उसकी आवाज सुनने के लिए और उसके आत्मा के माध्यम से परमेश्वर द्वारा मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना करें।*** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश करने के विषय में इस पाठ को प्रभु के लिए प्रतिबद्ध करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) ***(शांत समय)*** **न्यायियों 13–16**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** ***(या*** अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (न्यायियों 13,14,15 और 16) से शान्त समय में क्या सीखा है।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें और लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) ***(परमेश्वर का राज्य)*** **(2) रोमियों 9:62**

दो–दो करके ***समीक्षा करें।***

(1) रोमियों 1:17। क्योंकि उसमें परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से और विश्वास के लिये प्रगट होती है; जैसा लिखा है, "विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा।"

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) ***(रोमियों के नाम पत्री)*** **रोमियों 2:17–29**

परिचय दें। **रोमियों 2:17–29** का एक साथ अध्यनन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें।

रोमियों 2:17–20 में, पौलुस यहूदियों को सीधे संबोधित करता है और उन विशेषाधिकारों और विशिष्टाधिकारों की गणना करता है जिन पर यहूदी स्वयं पर गर्व करते थे। रोमियों 2:21–24 में, वह यहूदियों को दिखाता है कि, *यदि वे उन सभी विशेषाधिकारों में शामिल कर्तव्यों या शिक्षाओं को पूरा करने में विफल रहे, जिनमें उन्होंने आनंद लिया था, तो वे विशेषाधिकार केवल उनकी दण्डाज्ञा को बढ़ावा दे रहे थे।* यहूदियों के पाखंड के विरुद्ध पौलुस की घिन और आक्रोश पर ध्यान दें: "तुम दूसरों को सिखाते हो, परन्तु तुम स्वयं को नहीं सिखाते हो"। "तुम गलत कार्य करने के विरुद्ध उपदेश देते हो, परन्तु तुम स्वयं चोरी करते, व्यभिचार करते और मंदिरों को लूटते हो"। "तुम व्यवस्था के विषय में डींग मारते हैं, परन्तु व्यवस्था को तोड़कर परमेश्वर का अनादर करते हो"। "तुम अन्यजातियों द्वारा परमेश्वर को दोष देने का कारण बनते हो!" रोमियों 2:25–27 में, पौलुस खतना होने या बिल्कुल

नहीं होने का मूल्यांकन करता है। और रोमियों 2:28-29 में, पौलुस स्पष्ट रूप से खतने की वास्तविक प्रकृति और उद्देश्य सिखाता है।

चरण 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइए एक साथ पढ़े रोमियों 2:17-29।

आइए हम बारी-बारी एक-एक पद तब तक पढ़ें, जब तक कि हम पढ़ना पूरा न कर लें।

चरण 2. खोज करें। **अवलोकन**

पढ़ें। आइए एक साथ पढ़े रोमियों 2:17-29।

आइए हम बारी-बारी एक-एक पद तब तक पढ़ें, जब तक कि हम पढ़ना पूरा न कर लें।

विचार करें। इस पद में आपके लिए कौनसा सत्य महत्वपूर्ण है?

या इस पद में से कौनसा सत्य आपके दिमाग या दिल को छूता है?

अभिलेखित करें। एक या दो सत्यों की खोज करें जिन्हें आप समझते हैं। उनके विषय में सोचें और अपने विचारों को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्यों को सोचने और लिखने के लिए लगभग दो मिनट का समय मिल गया हो, तब साझा करने के लिए बारियाँ लें)।

आइए हम एक दूसरे के साथ साझा करने के लिए बारियाँ लें, जो कुछ भी हमने खोजा है।

(स्मरण रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग-अलग चीजें साझा करेंगे)

2:17-20

खोज 1. **पौलुस का यहूदी कर्मकाण्डवाद के संबंध में उनके विशेषाधिकार और उनके पद की स्थिति का अनावरण।**

(1) वे विशेषाधिकार जिन से यहूदी स्वयं पर गर्व करते थे (रोमियों 2:17-18)।

"यहूदी" नाम का उल्लेख बाइबल में पहली बार 2 राजाओं 16:6 (586 ई.पू. से पहले) में मिलता है। बाबुल के निर्वासन के दौरान और बाद में (विनाश से मंदिर के पुनर्निर्माण तक, 586 से 516 ई.पू., 70 वर्ष) यह वह नाम था जिसमें यहूदी स्वयं पर गर्व करते थे। नाम का अर्थ है यहूदा राज्य का सदस्य। वे स्वयं को "यहूदी" कहते थे और यहूदी होने पर उन्हें गर्व था।

वे व्यवस्था पर "निर्भर" थे, अर्थात्, उन्होंने व्यवस्था को रखने और व्यवस्था के विषय में बोलने से "आराम और सहारा पाने" के अर्थ में "विश्राम" किया। परन्तु उन्होंने व्यवस्था का अभ्यास नहीं किया।

उन्होंने "परमेश्वर में महिमा" पाई, अर्थात् उन्होंने कहा कि वे एकल और एकमात्र सच्चे परमेश्वर की उपासना करते हैं। वास्तव में वह केवल एक खाली घमंड था!

वे "परमेश्वर की इच्छा को जानते थे", अर्थात्, उनके पास परमेश्वर की इच्छा के प्रकाशन के रूप में पुराना नियम था। उन्होंने "जो उत्कृष्ट है, उसे अनुमोदित किया", अर्थात् उन्होंने परमेश्वर की इच्छा के विषय में निरन्तर तर्क दिया और इसका परीक्षण किया कि परमेश्वर की इच्छा (व्यवस्था) के अनुसार क्या है, उसको अस्वीकार करके जो उससे अलग है और उसे अनुमोदित करके को उसके अनुरूप है। उन्हें "व्यवस्था में निर्देशित" किया गया था (शाब्दिक अर्थ: "व्यवस्था में जिरह प्राप्त किया

था") (यूनानीः कटेचेओ) (नहेम्याह 8:8)।

(2) वह स्थिति जिसमें यहूदियों स्वयं पर गर्व करते थे (रोमियों 2:29-20)।

यहूदी स्वयं को संसार के अन्य सभी राष्ट्रों से अति श्रेष्ठ मानते थे। वे अन्यजाति राष्ट्रों को "आध्यात्मिक रूप से अंधे" मानते थे और उनका मानना था कि केवल यहूदी ही अन्यजातियों को निर्देश देने में सक्षम हैं। इसने यहूदियों को जिम्मेदारी के बजाय श्रेष्ठता का एहसास दिया। उन्होंने कहा कि अन्यजातियों के राष्ट्र अंधेरे में थे, अज्ञानी और अपरिपक्व थे, क्योंकि वे व्यवस्था को नहीं जानते थे! यहूदियों ने व्यवस्था के "अज्ञान" (यूनानीः अफ्रोन) की बराबरी "अपरिपक्वता" (यूनानीः नेपिओस) के साथ की और इस प्रकार व्यवस्था के ज्ञान के साथ परिपक्वता की।

अपने आप में "अंधों का मार्गदर्शक", "उन लोगों के लिए प्रकाश जो अंधेरे में हैं", "मूर्खों के लिए प्रशिक्षक और बच्चों के शिक्षक होना" गुण थे। फिर भी पौलुस ने कहा कि यहूदियों के साथ यही गुण उनकी खोटाई थे, क्योंकि वे उन चीजों के विषय में डींग मारते थे जो वे स्वयं करने में विफल रहे थे! यहूदी डींग मारते थे कि उनके पास पुराने नियम (व्यवस्था) की पुस्तक में "ज्ञान और सत्य का अवतार" है। इसका अर्थ यह है कि वे डींग मारते थे कि उनके पास ज्ञान और सत्य एक सुव्यवस्थित रूप में रखा है (सीएफ. "शिक्षण का रूप" रोमियों 6:17 में और "मजबूत शिक्षण का प्रतिमान" 2 तीमुथियुस 1:13 में। फिर भी, यहूदियों के पास धार्मिकता का केवल एक बाहरी रूप था, परन्तु उस धार्मिकता की आंतरिक वास्तविकता का अभाव था (सीएफ. 2 तीमुथियुस 3:5)!

2:21-24

खोज 2. **<u>जो यहूदियों ने बोला और जो वास्तव में किया, उसके बीच घोर असंगतता</u>।**

यहूदियों के फायदे की विकृत अवधारणा ने उनको आत्मतुष्ट बना दिया और उनकी आत्मतुष्टि ने उन्हें पाखंडी बना दिया। यहूदियों को उनकी आत्मतुष्टि से आघात पहुँचाने के लिए, पौलुस उनके पाखंड को उजागर करता है। वह यहूदियों की शिक्षाओं के तीन दृष्टांत देता है, जिनका वे स्वयं पालन नहीं करते थे। यहूदियों ने *लगातार* (वर्तमान काल) चोरी, व्यभिचार और मूर्तिपूजा की।

मूर्तिपूजा और लैंगिक अनैतिकता ठीक रीति से अन्यजातियों के पाप थे (सीएफ. रोमियों 1:24-25), जिनकी यहूदियों ने सबसे गंभीर रूप से निंदा की, फिर भी स्वयं किए (भजन संहिता 50:16-18; यिर्मयाह 5:30-31; यिर्मयाह 6:13-14)। यहूदी टीका-टिप्पणी[1] में बुद्धिजीवियों के बीच चोरी, रब्बियों के बीच निर्लज्ज व्यभिचार और मंदिरों की लूट के उदाहरणों का उल्लेख है। इसके अलावा, यीशु मसीह इस बात का उदाहरण देता है कि कैसे फरीसियों का जीवन उनके शिक्षण के अनुरूप नहीं था (मत्ती 23, मरकुस 7:9-13; लूका 11:37-52)। अन्यजातियों के मंदिरों के अपवित्रीकरण से अधिक कोई भी चीज उनके आक्रोश को न भड़काती। यहूदियों ने अपने ही मंदिर को "डाकुओं की खोह" (मत्ती 21:13) में बदल दिया और परमेश्वर को उसमें लूटा जो उसका था (सीएफ. मरकुस 7:11)।

<u>यहूदियों ने उनके पास व्यवस्था होने के विषय में डींग मरी, परन्तु व्यवस्था को तोड़कर परमेश्वर का अनादर किया</u>। याकूब 2:10 और याकूब 4:11-12 के अनुसार, व्यवस्था की अनाज्ञाकारिता, स्वयं परमेश्वर, व्यवस्था देनेवाले की महिमा के विरुद्ध अपमान है, और यही कारण है कि अन्यजाति

---

[1] स्ट्रेक एन बिलरबेक प्प्प पृ.107-115 के "कोम्मेन्टर जूम न्यूएन टेस्टामेंट अ०स तालमुद अंड मिडरास्च"

के समान होना सिखाया (भजन संहिता 115:8)। और यदि किसी राष्ट्र ने इस प्रकार के अपराध किए हैं, तो उनका "ईश्वर" एक चोर, एक व्यभिचारी और मंदिर का एक लुटेरा होना चाहिए! इस प्रकार यहूदियों ने बाइबल के परमेश्वर का अनादर किया।

चरण 3. प्रश्न। **व्याख्या**

पढ़ें। आइए एक साथ पढ़े रोमियों 2:17-29।

आइए हम बारी-बारी एक-एक पद तब तक पढ़ें, जब तक कि हम पढ़ना पूरा न कर लें।

विचार करें। इस पद में आपके लिए कौनसा सत्य महत्वपूर्ण है?

या इस पद में से कौनसा सत्य आपके दिमाग या दिल को छूता है?

अभिलेखित करें। एक या दो सत्यों की खोज करें जिन्हें आप समझते हैं। उनके विषय में सोचें और अपने विचारों को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्यों को सोचने और लिखने के लिए लगभग दो मिनट का समय मिल गया हो, तब साझा करने के लिए बारियाँ लें)।

आइए हम एक दूसरे के साथ साझा करने के लिए बारियाँ लें, जो कुछ भी हमने खोजा है।

(स्मरण रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग-अलग चीजें साझा करेंगे)

2:25-27

प्रश्न 1. **पौलुस कैसे कह सकता है कि शारीरिक खतने का अभी भी मूल्य है?**

ध्यान दें।

(1) यहूदियों के शारीरिक खतने का महत्व केवल तभी होता था जब पुराने नियम की वाचा (अनुग्रह की वाचा) की आवश्यकताओं को पूरा किया जाता था (रोमियों 2:25)।

रोमियों को लिखी गई पत्री में शब्द "व्यवस्था" के कई अलग-अलग अर्थ हैं और सही अर्थ शब्द के संदर्भ पर निर्भर है। यहाँ, शब्द "व्यवस्था" विभिन्न पुराने नियम के औपचारिक कानूनों का नहीं, बल्कि "पुराने नियम की वाचा" का उल्लेख करता है। इस पुराने नियम की वाचा में, परमेश्वर ने वादा किया था कि वह उसके लोगों इस्राएल का परमेश्वर होगा और यह कि इस्राएल परमेश्वर के लोग होंगे (उत्पत्ति 17:7; लैव्यव्यवस्था 26:12)। यह एक वादे और अनुग्रह के साथ एक वाचा (एक समझौता) थी।

इस वाचा की आवश्यकताएँ (रोमियों 2:26) परमेश्वर के वादे पर *विश्वास* था (सीएफ. उत्पत्ति 15:5-6; सीएफ. यूहन्ना 6:28-29) जो आज्ञाकारिता में दिखाया गया था (उत्पत्ति 22:17-18; इब्रानियों 4:2,6; याकूब 2:17,22)। इस वाचा का चिन्ह और मुहर शारीरिक खतना था (उत्पत्ति 17:9-14)।

पुराने नियम में शारीरिक खतना एक धार्मिक कर्तव्य नहीं था, बल्कि एक धार्मिक कर्तव्य का चिन्ह था! पौलुस ने यह सुनिश्चित किया कि शारीरिक खतने का महत्व केवल यहूदियों के लिए था जब यहूदियों ने विश्वास की आवश्यकता को अपनी आज्ञाकारिता दिखा कर पूरा किया। यदि यहूदियों को कोई विश्वास नहीं था और कोई आज्ञाकारिता नहीं थी, तो परमेश्वर की वाचा के वादों पर उनका दावा मात्र अनुमान (अहंकार) और यहाँ तक कि एक खाली उपहास था!

इस प्रकार, रोमियों 2:25-27 में, "व्यवस्था" (की आवश्यकताओं) को मानना "वाचा" (की

आवश्यकताओं) को मानने के बराबर है जिन्हें परमेश्वर ने आदरणीय वृद्ध पुरुषों के साथ बनाया था। जब परमेश्वर की वाचा की आवश्यकताओं (अर्थात्, आज्ञापालन में दिखाए गए विश्वास) की अवहेलना की जाती है या उन्हें तोड़ा जाता है, तब परमेश्वर द्वारा यहूदियों के खतने को खतना नहीं माना जाता है! तब बाहरी चिन्ह अपना महत्व खो देता है (रोमियों 2:25)!

(2) अन्यजाती जिनका शारीरिक रूप से खतना नहीं हुआ है, यदि वाचा की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं, तो वे परमेश्वर की वाचा को रद्द नहीं करते हैं (रोमियों 2:26)।

यहाँ, "व्यवस्था" की आवश्यकताओं को पूरा करना अविश्वासियों को संदर्भित नहीं करता जो रोमियों 2:14 में उल्लेख के समान अपने नैतिक स्वभाव और विवेक का पालन करते हैं। इसके बजाय यह उन अन्यजातियों को संदर्भित करता है जो रोमियों 1:16-17 में उल्लेख के समान मसीही बन गए हैं। अन्यजाति मसीहियों में से अधिकांश शारीरिक रूप से खतनारहित थे। परन्तु क्योंकि मसीहियों ने यीशु मसीह में विश्वास और यीशु मसीह की आज्ञाकारिता के कारण वाचा की आवश्यकताओं को पूरा किया, इसलिए मसीही "परमेश्वर के वास्तविक लोग" बन जाते हैं (2 कुरिन्थियों 6:16; 1 पतरस 2:9-10) और यहाँ तक कि "परमेश्वर का इस्राएल" बोले जाते हैं (गलातियों 6:12-16)[2]। हालाँकि ये अन्यजाति अपने शरीर (देह) में खतनारहित थे, लेकिन अपने हृदयों (आत्माओं) में खतनाप्राप्त थे और परमेश्वर ने इसे ही एक असली खतना माना (रोमियों 2:28-29)! शरीर के खतने के बाहरी संस्कार का उससे हटकर कोई मूल्य नहीं है जो यह दर्शाता है! परन्तु जब वह उपस्थित होता है जो शारीरिक खतने का संस्कार दर्शाता है, तब शरीर में उसके चिन्ह की अनुपस्थिति परमेश्वर की कृपा की वाचा को रद्द नहीं करती है!

(3) शारीरिक रूप से खतना किए गए यहूदियों को शारीरिक रूप से खतनारहित मसीहियों द्वारा दोषी ठहराया जाएगा (रोमियों 2:27)।

अन्यजातियों में से मसीही इस्राएल का न्याय करेंगे (1 कुरिन्थियों 6:2)। मसीही व्यवस्था (वाचा) की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। यहूदियों के पास व्यवस्था (वाचा) की आवश्यकताएँ लिखित रूप में हैं, परन्तु उन्होंने व्यवस्था (वाचा) को तोड़ दिया है। इसलिए जो लोग वास्तविक विश्वासी हैं और अपनी आज्ञाकारिता में इसे दिखाते हैं वे अन्य सभी लोगों का न्याय करेंगे!

पुराने नियम के समय में से नीनवे[3] के विश्वास करनेवाले अन्यजाति अंतिम न्याय के दिन में खड़े होंगे और यीशु के समय में के अविश्वासी यहूदियों को दोषी ठहराएँगे (मत्ती 12:41-42)। शारीरिक

---

[2] पुराने नियम में परमेश्वर के लोग और नए नियम में परमेश्वर के लोगों को एक ही नाम से पुकारा जाता है: परमेश्वर का *पहला पुत्र* (निर्गमन 4:22; यिर्मयाह 31:9; इब्रानियों 12:23); परमेश्वर के *पुत्र और पुत्रियाँ* (यशायाह 43:6-7; 2 कुरिन्थियों 6:18); *परमेश्वर की पत्नी या दुल्हन* (यशायाह 54:1,11-12; प्रकाशितवाक्य 21:9-10); *बारह गोत्र* (उत्पत्ति 49:28; प्रकाशितवाक्य 7:4; 21:12; याकूब 1:1); *याजकों का राज्य* (निर्गमन 19:6; 1 पतरस 2:9; प्रकाशितवाक्य 1:6); *एक पवित्र राष्ट्र* (निर्गमन 19:6; 1 पतरस 2:9); *परमेश्वर के चुने हुए लोग* (व्यवस्थाविवरण 7:6; 1 पतरस 2:9); *परमेश्वर की वाचा के लोग* (लैव्यव्यवस्था 26:12; 2 कुरिन्थियों 6:16); *फैले हुए/प्रवासी* (व्यवस्थाविवरण 30:1; यहेजकेल 12:15; एस्तेर 3:8; 1पतरस 1:1)य इस्राएल की भेड़शाला से *भेड़ें* और दूसरे देशों की *भेड़ें* (यहेजकेल 34; यूहन्ना 10:16); *इस्राएल* (1 शमूएल 7:23; गलातियों 6:14-16); *यहूदी* (जकर्याह 8:22-23; रोमियों 2:28-29); *सिय्योन* (यशायाह 51:16; 52:7; इब्रानियों 12:22-24); *यरूशलेम* जो नीचे है और यरूशलेम जो ऊपर है (गलातियों 4:25-26); *परमेश्वर का मंदिर* (2 कुरिन्थियों 6:16)।
सुसमाचार के प्रचार द्वारा परमेश्वर *अपनी कलीसिया* को स्वयं अपने पास बुलाते हैं, पुराने नियम की अवधि के दौरान (रोमियों 10:18-21; गलातियों 3:8; इब्रानियों 4:1-3) और नए नियम की अवधि दौरान (प्रेरितों 20:24; सीएफ. 13:44-49)। यहूदियों और अन्यजातियों में से विश्वासियों को एक आत्मा द्वारा मसीह के एक शरीर में बपतिस्मा दिया जाता है और उन्हें पीने के लिए एक आत्मा दिया गया था (1 कुरिन्थियों 12:13); दोनों को एक साथ *कलीसिया* कहा जाता है (इब्रानी: क्वाहलय यूनानी: एक्कलीसिया) (भजन संहिता 107:32; मत्ती 16:18; प्रेरितों के काम 8:2; प्रेरितों के काम 9:1); एक साथ *एक देह के सदस्य* हैं (इफिसियों 3:6); एक साथ *उत्तराधिकारी* (इफिसियों 3:6; गलातियों 3:29) और *परमेश्वर के सभी वादों में एक साथ हिस्सेदार हैं* (इफिसियों 3:6; 2 कुरिन्थियों 1:20)! सीएफ. निर्देश पुस्तक 3, पूरक 12।

[3] नीनवे इराक में आधुनिक मोसुल है।

रूप से खतना किए गए विश्वासियों का विश्वास शारीरिक रूप से खतना किए गए यहूदियों के अविश्वास को दोषी ठहराएगा!

यह सब साबित करता है कि शारीरिक खतना या पानी के साथ बपतिस्मा जैसे बाहरी और शारीरिक संस्कार में बचाने की कोई शक्ति नहीं है क्योंकि परमेश्वर ष्आत्माष है और आंतरिक आध्यात्मिक आज्ञाकारिता की माँग करता है।

2:28-29

प्रश्न 2. **शारीरिक खतने की वास्तविक प्रकृति और लक्ष्य क्या है?**

ध्यान दें।

अब्राहम (2067 ई.पू.) के समय, शारीरिक खतना विश्वास के औचित्य का संकेत था (रोमियों 4:11)। परन्तु मूसा के समय (1407 ई.पू.) के लंबे समय पश्चात, यहाँ तक कि बाबुल निर्वासन (587 ई.पू) के भी पश्चात, यहूदी धार्मिक शिक्षकों और अगुवों ने शारीरिक खतने के अर्थ को व्यवस्था के कार्यों द्वारा औचित्य के संकेत में बदल दिया है (यूहन्ना 7:19, 22; गलातियों 5:1-4)।

(1) शारीरिक खतना मूल रूप से विश्वास द्वारा उचित ठहराने का संकेत था (रोमियों 4:11)। **अब्राहम के समय में शारीरिक खतना (2067 ई.पू.)।** परमेश्वर ने अब्राहम के साथ वादों और अनुग्रह की वाचा बाँधी। इस वाचा में, उसने अनुग्रह के तहत अब्राहम से तीन चीजों का वादा कियाः पहला। अब्राहम पृथ्वी पर कई राष्ट्रों का पिता बनेगा। उसके वंशज आकाश के तारे या समुद्र के किनारे की रेत के समान होंगे। और प्रभु उसके वंशजों का परमेश्वर होगा। दूसरा। परमेश्वर अब्राहम के वंशजों को कनान की भूमि देगा। यहोशू के भूमि पर विजय प्राप्त करने के समय तक (1497-1387 ई.पू.) पहले ही दो वादे पूरे कर लिए थे (यहोशू 21:43-45; 23:14-16)। तीसरा। परमेश्वर अब्राहम के वंशजों में से एक के द्वारा पृथ्वी के सभी राष्ट्रों को आशीष देगा (उत्पत्ति 12:1-3,7; 15:1-6,18-21; 17:1-14; 22:17-18)। तीसरा वादा मसीह के पहले आगमन पर पूरा हुआ (गलातियों 3:16)।

अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और परमेश्वर ने उसे धार्मिकता के रूप में माना (उत्पत्ति 15:6)। परमेश्वर ने अब्राहम को परमेश्वर के वादों और परमेश्वर की कृपा की इस वाचा के चिन्ह और मुहर के रूप में शारीरिक खतना दिया। इसलिए शारीरिक खतना *एक स्पष्ट संकेत और मुहर था कि परमेश्वर विश्वास के माध्यम से लोगों को उचित ठहराता है*

(रोमियों 4:11)! जिन लोगों का शारीरिक रूप से खतना किया जाता था, वे परमेश्वर के वादों और परमेश्वर की कृपा की इस वाचा को रखने के लिए बाध्य थे। वे विश्वास के द्वारा उचित ठहराए लोगों के रूप में जीने के लिए बाध्य थे, अर्थात्, इस संसार में परमेश्वर की वाचा के रूप में।

मूसा के समय में शारीरिक खतना (1407 ई.पू.)। पुराने नियम की अवधि के दौरान बाहरी, शारीरिक खतने का एक आंतरिक, आध्यात्मिक अर्थ भी था। वह चमड़ी जिसे काट दिया जाता था वह शरीर की अशुद्धता की प्रतीक थी और शारीरिक खतना हृदय के आध्यात्मिक खतने की ओर इशारा करता था। शरीर की अस्वच्छता (माँस) को काटना हृदय की अस्वच्छता को दूर करने का प्रतीक था (व्यवस्थाविवरण 10:16; 30:6; यिर्मयाह 4:4)। इस प्रकार, पुराने नियम की अवधि के दौरान शरीर का खतना एक उच्च वास्तविकता का *दृश्यमान प्रतीक* था, अर्थात् हृदय का आध्यात्मिक खतना। पुराने नियम की

अवधि के दौरान शरीर का खतना *बाद में* नए नियम की अवधि के दौरान *पवित्र आत्मा द्वारा नए जन्म प्राप्ति* की ओर इशारा करता है (रोमियों 2:28-29)।

अपने आप में शारीरिक खतने का कोई महत्व नहीं है। खतने का कोई महत्व नहीं है जब कोई बाइबल के परमेश्वर (या यीशु मसीह) में विश्वास नहीं करता है, परन्तु फिर भी व्यवस्था को बनाए रखने के द्वारा उचित होने का प्रयास करता है (उदाहरण के लिए, शारीरिक खतने के माध्यम से)। हृदय के आध्यात्मिक खतने के बिना शरीर का शारीरिक खतना बेकार है। धार्मिक संस्कार (जैसे शारीरिक खतना) मनुष्य का काम बना रहता है, परन्तु हृदय का आध्यात्मिक खतना परमेश्वर (परमेश्वर का आत्मा) का काम है!

इसलिए बाइबल में अविश्वासी और अधर्मी लोगों को "हृदय में खतनारहित" कहा जाता है (यिर्मयाह 9:25-26; प्रेरितों के काम 7:51)। परन्तु यहूदियों के साथ-साथ अन्यजातियों में मसीही, जो परमेश्वर के आत्मा और मसीह में महिमा द्वारा आराधना करते हैं, उन्हें "सच्चा खतना" कहा जाता है (फिलिप्पियों 3:3)! सभी प्राकृतिक यहूदियों को "शरीर के अनुसार इस्राएल" कहा जाता है (यूनानी: इस्राएल काटा सर्क्स) (1 कुरिन्थियों 10:18), परन्तु सभी लोग जिन्होंने क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह में अपना भरोसा रखा है और क्रूस पर चढ़ाया गया जीवन जीते हैं, वे परमेश्वर के वास्तविक लोग हैं और "परमेश्वर का इस्राएल" कहलाए जाते हैं (गलातियों 6:12-16; सीएफ. रोमियों 9:6ख)! अब्राहम उन लोगों का "शारीरिक पिता" हो सकता है जो स्वयं को यहूदी कहते हैं, परन्तु वह सभी लोगों का "आध्यात्मिक पिता" है, जो बाइबल के परमेश्वर में विश्वास करते हैं, चाहे वे मूल रूप से यहूदी या अन्यजाति (रोमियों 4:11; यूहन्ना 8:37-44) थे।

व्यवस्था (इस्राएल के नैतिक, औपचारिक और नागरिक कानूनों को ध्यान में रखते हुए) को मानना संसार में किसी भी इंसान को उचित नहीं ठहरा सकता है और न ही ठहराएगा, क्योंकि कोई भी इंसान पूर्ण व्यवस्था को न रख सकता है या न रखा है (गलातियों 3:10; याकूब 2:10)।

(2) शारीरिक खतना बाद में व्यवस्था के कामों को उचित ठहराने का संकेत बन गया (यूहन्ना 7:19, 22)।

बाबुल के निर्वासन (586 ई.पू.) के पश्चात शारीरिक खतना। अब्राहम के लगभग 1500 वर्ष पश्चात, बाबुल के निर्वासन (587 ई.पू.) के दौरान यहूदी धर्म शिक्षकों और अगुवों ने शारीरिक खतने के मूल अर्थ को बदल दिया! शारीरिक खतने का मूल अर्थ: "विश्वास के द्वारा उचित ठहराए जाने का एक चिन्ह *(जैसा परमेश्वर ने कहा और किया है)*" को "*व्यवस्था के कामों द्वारा उचित ठहराने के चिन्ह (जो लोग करते हैं)*" में बदल दिया गया था। यहूदी शरीर के शारीरिक खतने (माँस) को अब विश्वास के द्वारा उचित ठहराए जाने या आध्यात्मिक रूप से हृदय में खतना होने के चिन्ह और मुहर के रूप में नहीं मान रहे थे, परन्तु इसे परमेश्वर की प्रतिज्ञा (परम वादा) के रूप में माना जाता था कि परमेश्वर उन लोगों को अनंत जीवन देगा जो व्यवस्था (नैतिक, औपचारिक और नागरिक) का पालन करेंगे!

लैव्यव्यवस्था 18:5 में कहा गया है, "जो मनुष्य उन को माने (परमेश्वर की राजाज्ञा और व्यवस्था) वह उनके कारण जीवित रहेगा (इस अर्थ में कि वह समृद्ध जीवन जीयेगा)"। परन्तु यहूदियों ने इसकी इस रीति से गलत व्याख्या की: "जो आदमी व्यवस्था का पालन करता है, वह अनन्त जीवन प्राप्त करेगा।" उस समय से यहूदियों का मानना है कि शारीरिक खतना यह संकेत और मुहर है कि

परमेश्वर ने व्यवस्था के कामों के माध्यम से लोगों को उचित ठहराया (या बचाया) है। जबकि परमेश्वर ने शारीरिक खतने को कभी यह अर्थ नहीं दिया!

आठवें दिन एक नवजात बेटे का शारीरिक खतना व्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण कार्य बन गया (यूहन्ना 7:19-24)! शारीरिक खतना एक मानवीय धार्मिक संस्कार बन गया जिसने उस व्यक्ति को बचाया (उचित ठहराया) (प्रेरितों के काम 15:1)! शरीर के विषय में मनुष्य के कार्य ने हृदय में परमेश्वर के कार्य को प्रतिस्थापित कर दिया था!

नए नियम की अवधि (50 ई.स.) के दौरान शारीरिक खतना। लगभग 50 ईस्वी सन् में प्रेरित पौलुस ने गलातियों को अपने पत्री में लिखा था कि यदि कोई व्यक्ति स्वयं का शारीरिक रूप से खतना करने देता है, क्योंकि वह मानता है कि व्यवस्था को बनाए रखने के द्वारा उसे उचित ठहराया जाएगा, तो उसे पूर्ण व्यवस्था (सिद्धत्ता से) मानने के लिए बाध्य किया गया था (गलतियों 5:1-4)! पौलुस ने यह भी सिखाया कि संसार में कोई भी पूर्ण व्यवस्था को नहीं रखता या रखने में सक्षम है (रोमियों 3:10-18)। इसलिए परमेश्वर संसार में किसी को भी व्यवस्था मानने के आधार पर उचित नहीं ठहराएँगे (रोमियों 3:19-20, 28)।

यह स्पष्ट है कि नए नियम के समय में यहूदियों ने व्यवस्था (विशेष रूप से शारीरिक खतना) को मानना किसी प्रकार से उनके उचित ठहराए जाने या उद्धार को सुरक्षित रखने के एक साधन के रूप में माना था। उन्होंने सिखाया, "जब तक तुम्हारा मूसा की रीति के अनुसार खतना (शारीरिक) नहीं किया जाता, तब तक तुम बच नहीं सकते" (प्रेरितों के काम 15:1)। अन्य यहूदी रब्बियों ने सिखाया कि "कोई खतना (शारीरिक) प्राप्त आदमी नरक नहीं देखेगा"। और उन्होंने कथित किया कि "परमेश्वर ने अब्राहम से शपथ खाई, कि कोई भी, जिसका (शारीरिक) खतना किया जाएगा, उसे नरक नहीं भेजा जाएगा"। उन्होंने सभी को बताया कि "अब्राहम नरक के द्वार के सामने बैठता है और किसी भी (शारीरिक) खतना प्राप्त इस्राएली को वहाँ प्रवेश होने की अनुमति नहीं देता है।" इस प्रकार, शारीरिक खतना यहूदी राष्ट्रवाद का बाहरी चिन्ह बन गया!

यहूदी रब्बियों की यह शिक्षा निश्चित रूप से बाइबल के तथ्यों पर आधारित नहीं है और इसे अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए!

(3) नकली यहूदी और बेकार शारीरिक खतना।

शब्द "यहूदी" (इब्रानीः जेहुदी या जुदी) यहूदा (इब्रानीः यहुदाह) के गोत्र से लिया गया है और संभवतः "प्रशंसा करने" (इब्रानीः होदाह) शब्द से लिया गया है (उत्पत्ति 29:35; 49:8)। पौलुस ने कहा कि एक असली यहूदी परमेश्वर से अपनी प्रशंसा प्राप्त करता है (क्योंकि उसने बाइबल के परमेश्वर में विश्वास किया है और उसकी आज्ञा मानी है), जबकि एक नकली यहूदी लोगों से अपनी प्रशंसा प्राप्त करने की इच्छा रखता है (इस तथ्य के कारण कि उसका खतना किया गया है)। यीशु ने यहूदियों को दोषित किया, क्योंकि वे बाहरी दिखावे पर भरोसा करते थे और हमेशा एक दूसरे से प्रशंसा की खोज करते थे (यूहन्ना 5:44)। पौलुस एक मात्र बाहरी शारीरिक यहूदी को नकली यहूदी के रूप में मानता है। याकूब से प्राकृतिक वंशज होना याकूब के वंशज को परमेश्वर की दृष्टि में असली यहूदी नहीं बनाता है!

नए नियम के समय में शारीरिक खतना अब विश्वासियों के साथ परमेश्वर की अनुग्रह की वाचा का संकेत नहीं था, परन्तु मूसा के औपचारिक कानून के आधार पर एक मानव रिवाज बन गया था

(यूहन्ना 7:22)। तथापि, शारीरिक खतने के बाहरी चिन्ह का हृदय के आध्यात्मिक खतने के बिना कोई मूल्य नहीं है!

(4) वास्तविक यहूदी और असली आध्यात्मिक खतना।

एक वास्तविक "यहूदी", अर्थात्, एक विश्वासी जो परमेश्वर से अपनी प्रशंसा प्राप्त करता है, वह बाहरी और शारीरिक रूप से जो कुछ भी है, उससे वर्गीकृत नहीं होता है, परन्तु उससे कि वह आंतरिक और आध्यात्मिक रूप से क्या है! एकमात्र वास्तविक "यहूदी" "एक परदे में यहूदी (बाहरी दिखावट में नहीं)" है और असली खतना "हृदय का खतना है, पवित्र आत्मा द्वारा" और न कि औपचारिक व्यवस्था के अनुसार (रोमियों 2:29क)! नकारात्मक रूप से कहा जाए तो, एक व्यक्ति जिसका हृदय में खतना नहीं हुआ है (नया जन्म प्राप्त नहीं है) उसे परमेश्वर कोई प्रशंसा, स्वीकृति या मान्यता प्राप्त नहीं होगी (रोमियों 2:29ख!)! सकारात्मक रूप से कहा जाए तो, जिस व्यक्ति ने आध्यात्मिक रूप से पवित्र आत्मा के कार्य के माध्यम से हृदय में खतना करवाया है, उसे परमेश्वर से प्रशंसा, स्वीकृति और मान्यता प्राप्त होगी! इस प्रकार, "एकमात्र वास्तविक यहूदी" (अर्थात्, वह व्यक्ति जो परमेश्वर द्वारा स्वीकृत है) एक मसीही है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह मूल रूप से एक प्राकृतिक यहूदी या एक प्राकृतिक अन्यजाति था! केवल ऐसे व्यक्ति को परमेश्वर से प्रशंसा प्राप्त होती है! नकली यहूदियों को अन्य यहूदियों से उनकी प्रशंसा और सम्मान मिलता है जिन्होंने स्वयं का खतना करने की अनुमति दी है। परन्तु वास्तविक यहूदियों को परमेश्वर से प्रशंसा मिलती है।

भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह ने पहले ही यहूदियों को मानव ज्ञान, शक्ति और धन में घमंड नहीं करने, परन्तु बाइबल के परमेश्वर को जानने और उसके प्रकाशन को समझने के लिए समझाया था। परमेश्वर राष्ट्रों (जैसे मिस्र, यहूदा और अम्मोन) को दंडित करेगा क्योंकि उनका केवल "माँस (शरीर)" में खतना किया गया है और "हृदय में" नहीं (यिर्मयाह 9:23-26)!

प्रेरित ने ऐसे धार्मिक शिक्षकों और अगुवों के विरुद्ध चेतावनी दी है जो लोगों पर शारीरिक खतना लागू करते हैं। उन्हें "शरीर विकृत करनेवाले" कहा जाता है। केवल वे लोग जो आत्मा में परमेश्वर की आराधना करते हैं, जो मसीह यीशु में महिमा करते हैं और जो शरीर में कोई भरोसा नहीं रखते हैं (शारीरिक खतना, बल्कि इस तथ्य पर कि वे अपने हृदय में खतनाध्नया जन्म प्राप्त किए हुए हैं) "(सच्चे) खतना प्राप्त हैं" (फिलिप्पियों 3:2-3)।

नया नियम स्पष्ट रूप से सिखाता है कि औपचारिक कानून (लैव्यव्यवस्था 12:3) के एक भाग के रूप में शारीरिक खतना यीशु मसीह द्वारा *पूरा किया गया* है (मत्ती 5:17) और विश्वासियों के लिए यीशु मसीह में उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के साथ एकजुटता में *पूरा किया गया* है (कुलुस्सियों 2:11-12)। परिणामस्वरूप शारीरिक खतना *रद्द* (कुलुस्सियों 2:14) और *निरस्त* (इफिसियों 2:15) कर दिया गया है। "मसीह यीशु में, (शारीरिक) खतना होने और खतना न होने का कोई मूल्य है। केवल एक चीज जो मायने रखती है वह है प्रेम के द्वारा विश्वास का स्वयं को व्यक्त करना" (गलातियों 5:6)। "अब न तो (शारीरिक) खतना न होने और न ही खतना होने का कुछ भी अर्थ है; मायने रखता है एक नई सृष्टि होना" विश्वास से उचित ठहरकर और पवित्र आत्मा से नया जन्म प्राप्त करने के माध्यम से। सभी लोग जो इस नियम का पालन करते हैं, भले ही वे यहूदी हों या गैर-यहूदी, वास्तव में परमेश्वर के लोग हैं और उन्हें "परमेश्वर का इस्राएल" कहा जाता है (गलातियों 6:15-16; सीएफ. 2 कुरिन्थियों 6:16)! परन्तु सभी शारीरिक खतना प्राप्त यहूदियों को "शरीर के

अनुसार इस्राएल" कहा जाता है (1 कुरिन्थियों 10:18, सीएफ. रोमियों 9:6)!

चरण 4. लागू करना। अनुप्रयोग

विचार करें। इन वचनों में कौनसे सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 2:17-29 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

(याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग-अलग चीजें साझा करेंगे)

1. रोमियों 2:17-29 से संभावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

2:17. कभी भी अपनी यहूदी राष्ट्रीयता और इस तथ्य के विषय में डींग न मारें कि आप परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते में व्यवस्था (तोराह या शरीयत) पर निर्भर हैं।

2:21. जब आप दूसरों को सिखाते हैं, तो सुनिश्चित करें कि आप पहले स्वयं को सिखाते हैं (लूका 6:41-42)!

2:22. कभी भी किसी ऐसी चीज का प्रचार न करें जो आप स्वयं नहीं करते (मत्ती 23:3)!

2:24. स्मरण रखें कि गैर-मसीही आपके आचरण द्वारा आपके परमेश्वर के प्रति विचार हैं (भजन 115:8)!

2:29. यह अच्छे से सुनिश्चित करें कि आप पवित्र आत्मा द्वारा अपने हृदय में खतना-प्राप्त हैं(सीएफ. 2 कुरिन्थियों 13:5)।

2:29. लोगों की प्रशंसा की ओर मत देखो, परन्तु परमेश्वर की अनुशंसा की खोज करो (सीएफ. 2 कुरिन्थियों 10:18)।

2. रोमियों 2:17-29 से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मैं संपूर्ण सुसमाचार संदेश का प्रचार करना चाहता हूँ। इसका अर्थ यह है कि मुझे यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से उद्धार, साथ ही उन लोगों के लिए न्याय जो अविश्वासी रहते हैं (रोमियों 2:16), दोनों की घोषणा करनी चाहिए। मुझे सुसमाचार संदेश में अंतिम न्याय के दिन की घोषणा को शामिल करना चाहिए (सीएफ. यूहन्ना 3:18,36)।

मैं यह सिखाना चाहता हूँ कि प्रत्येक बाहरी धार्मिक संस्कार (चिन्ह) जैसे कि शारीरिक खतना, पानी के साथ बपतिस्मा या प्रभु भोज का कोई अर्थ नहीं है, यदि आंतरिक वास्तविकता अनुपस्थित है, जिसका वह संकेत है। मैं सभी लोगों को यह घोषणा करूँगा कि जब तक वे यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से अपने हृदय में खतना-प्राप्त नहीं होगें (सीएफ. यूहन्ना 1:12-13) वे खोए रहेंगे।

चरण 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 2:17-29 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5 प्रार्थना (8 मिनट) *(प्रतिक्रियाएँ)*

दूसरों के लिए प्रार्थना

दो या तीन के समूहों में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6 तैयारी (2 मिनट) *(निर्धारित कार्य)*

अगले अध्याय के लिए

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी नकल करने को कहें)।

1. प्रतिबद्धता। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "गेहूँ के बीच जँगली पौधों के दृष्टांत" का प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **1 शमूएल 2, 3, 7 और 8** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ।
   पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. याद करना। **(2) रोमियों 2:5।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों को रोज दोहराएं।
5. शिक्षा देना। मरकुस 4:26-29 में निहित **"गुप्त रूप से उगने वाले बीज" के दृष्टांत,** लूका 13:20-21 में निहित **"खमीर" के दृष्टांत** और मरकुस 4:30-32 में निहित **"राई के दाने" के दृष्टान्त** की तैयारी करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपने लेख का अद्यपन करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।